माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 21 नवम्बर, 2015 को नेशनल फोरम फॉर यूथ वेल्फेयर सोसायटी द्वारा 'विजन फॉर रिफार्मिंग सोसायटी' विषय पर चण्डीगढ में आयोजित गोष्ठी में दिया गया भाषण।

नेशनल फोरम फॉर यूथ वेल्फेयर सोसायटी के संरक्षक प्रोफेसर के.एन पाठक जी, चेयरमेन डा0 आर. पी. भारद्वाज जी, वाईस चेयरमैन प्रिंसीपल एस. चौधरी जी, वाईस चेयरमैन इंजीनियर नरेन्द्र शर्मा जी, प्रेसीडेंट इंजीनियर के.एल. भार्गव जी, सदस्य डा0 टंकेश्वर कुमार जी, अन्य सभी वरिष्ठ, अनुभवी, सेवानिवृत गणमान्य महानुभाव!

आज का यह सेमीनार कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। पहली चीज जो मैं देख रहा हूं वह यह है कि समाज में जो निवृत हो जाते हैं उनके बारे में ऐसा कहते हैं कि ये spent बुलेट हैं, ऐसे कारतूस हैं, ऐसी गोली हैं जो चल चुकी है। Now they are not of any use. लेकिन यहाँ पर तो मैं देख रहा हूं सब इसी तरह के लोग उपस्थित हैं। परन्तु आप जितने यहां पर बैठे हैं वे इस तरह के विषय पर विचार कर रहे हैं जिसकी बहुत जरूरत है। सिर्फ सैद्धांतिक विचार ही नहीं कर रहे आप उसकी रूपरेखा बना रहे हैं, Central Govt. को, Prime Minister को पत्र भी लिख रहे हैं, सुझाव भी दे रहे हैं। यानीकि जिस दिशा में आप अन्य लोगों को सक्रिय करना चाहते हैं उसमें खुद भी सक्रिय हैं। Then how can we say that you are a spent bullet?

यहां पर सिर्फ इंजीनियर ही नहीं सब वर्गों के लोग हैं। एक और बात यह है कि कि हम ऐसा सोचते हैं कि जो कुछ करना है वह सरकार को करना है। आज समाज में धारणा प्रचलित हो गई है कि जो कुछ करना है सरकार को करना है। हमारा काम तो सिर्फ वोट देना है पांच साल बाद। परन्तु वह भी सब नहीं देते, उतना परिश्रम भी नहीं करते, 70 प्रतिशत मतदान हो जाए तो बहुत है, लेकिन यह तो 50 और 60 पर ही निपट जाता है। वोट दे दिया और वोट देने के पश्चात जो करना है सरकार ने करना है, यह सोच बहुत गलत है, बहुत भ्रामक है। क्योंकि सरकार कुछ नहीं है, जो कुछ है वह सोसायटी है, समाज है। एक बात और कि समाज शास्वत है, यह permanent है, यह eternal है, यह continuous है। सरकार permanent नहीं है, यह continuous नहीं है, यह eternal नहीं है, यह बदलती रहती है।

1947 के पहले तो सरकार ही नहीं थी। कभी ईस्ट इंडिया कंपनी राज करती थी और ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह खड़ा हुआ। 1857 में तो अंग्रेजों की सत्ता ने राज करना शुरू कर दिया। इससे पहले राजा थे। राजा भी कितने थे? दो–चार नहीं थे, 565 थे। अंग्रेज जब यहां से छोड़कर गए तो जिन 565 राजाओं से राज लिया था उनको ही राज सौंपकर गए थे। सरकार का रूप बदलता रहता है और सरकार भी बदलती रहती है और लोकतंत्र होने के बाद भी सरकार बदलती रहती है। बदलना चाहिए क्योंकि power corrupts and absolute power corrupt absolutely. इसलिए सरकार बदलनी चाहिए।

हम कहते हैं कि सब काम सरकार करेगी। सरकार कौन होती है? सरकार को तो हम बनाते हैं। मास्टर हम हैं और सरकार हमारी servant है। यह भाव प्रत्येक जन के अंदर, समाज के अंदर जगना चाहिए। इसलिए आप इस फोरम के माध्यम से यह

बात प्रस्तावित करना चाहते हैं कि करना क्या है। इसलिए इतनी विशेषताओं के साथ फिर आपने कोई भी यहां बात की है तो किसके लिए की है? अपने लिए कुछ नहीं कर रहे हैं आप। आप यह नहीं कह रहे कि हमारी पैंशन बढाओ, आप कोई डिमांड भी नहीं पेश कर रहे। आज तो देश में आरक्षण की हवा चलती है, आप तो यह भी नहीं कह रहे कि रिटायर्ड लोगों के लिए आरक्षण दो, विधानसभा और लोकसभा की सीटें आरक्षण के तहत सेवानिवृतियों को रिजर्व करो, यह भी नहीं मांग रहे आप। आप क्या मांग रहे हैं? Vision For Reforming Society. जहां तक आपके अनुभव का, आपकी योग्यता का, आपकी कुशलता का सवाल है तो मुझे तो इतनी बड़ी संख्या में आप जो भी सब हैं, योग्य दिखते हो। मुझे लगता है कि आप सब के सब गर्वनर बनाए जा सकते हैं। लेकिन आप कुछ मांग नहीं रहे। आप सोसायटी के लिए सोच रहे हैं, आप समाज की सोच रहे हैं। यह बहुत अच्छी चीज है।

एक चीज मैं आपके सामने कहना चाहता था कि Vision For Reforming Society. Society मायने क्या, जब आप किसी भी तत्व के, किसी भी aliment के टुकड़े करते हैं तो टुकड़े करते जाएंगे। अंत में आपको molecule मिलेगा, फिर एटम मिलेगा और उसको भी तोड़ोगे तो आपको electron, proton, neutron मिलेगा। उनको भी तोड़ोगे तो आपको energy मिलेगी। ऐसे ही हर चीज के पार्ट होते हैं। तो सोसाइटी से मतलब क्या है? सोसाइटी का हम अर्थ क्या निकालते हैं? सोसाइटी का मतलब होता है व्यक्ति। अगर व्यक्ति नहीं तो सोसाइटी बनेगी क्या? अगर व्यक्ति नहीं है तो परिवार बनेगा क्या? और अगर परिवार नहीं तो सोसाइटी कैसे बनेगी और सोसाइटी नहीं तो राष्ट्र कैसे बनेगा, देश कैसे बनेगा? कुछ नहीं बनेगा।

इसलिए hit वहां करिए जहां से problem खड़ी होती है। अगर आप सोसायटी को reform करना चाहते हैं, if you want to develop any idea, any vision to reform society, where to hit? तब आपको फिर व्यक्ति की तरफ देखना पड़ेगा। अंग्रेजी में एक वाक्य है कि man is judged by the company which he keeps. अगर व्यक्ति को आप judge करना चाहते हैं तो यही पूछो कि इसके मित्र कौन हैं, इसकी कंपनी कौन सी है, कहां जाता है, किससे मिलता है, कहां घूमता है? उसी तरह सोसाइटी के बारे में भी है। कोई भी सोसाइटी, किसी भी देश की सोसाइटी, छोटी हो या बड़ी हो, उसको अगर आप देखना चाहते हैं तो फिर उस सोसाइटी के व्यक्ति को देखो, वह व्यक्ति कैसा है, व्यक्ति के आधार पर आपको सोसाइटी का आकलन हो जाएगा। आप किसी बर्तन में जब चावल पकाते हैं तो क्या पूरे चावल देखते हैं कि ठीक हो गए कि नहीं, खाने के लायक हो गये हैं या नहीं, चैक करते हैं सिर्फ एक चावल देखते हैं निकालकर, वह गल गया या नहीं, वह पक गया कि नहीं। वह खाने लायक हो गया कि नहीं। एक चावल देखकर आपको अंदाजा हो जाता है कि सब ठीक हो गया। वही स्थिति सोसाइटी के बारे में है। इसलिए सोसाइटी को reform करना चाहते हैं तो कई सुझाव हो सकते हैं, कई तरीके हो सकते हैं, कई बातें हो सकती हैं, लेकिन मुख्य चीज़ यह है कि व्यक्ति को सुधारो। व्यक्ति आप सुधारोगे तो सोसाइटी अपने आप सुधर जाएगी।

कई बार लोग सोचते हैं कि देश के अंदर पर्याप्त सड़कें हो जाएं। देश के अंदर पर्याप्त बिजली हो जाए, उद्योग लग जाएं। आपको भौतिक दृष्टि से, आर्थिक दृष्टि से सब ठीक लगेगा तो क्या सोसाइटी सुधर जाएगी? ये चीजें आवश्यक नहीं, ऐसा नहीं है। ये सब चीजें आवश्यक हैं क्योंकि जीवन की जो आवश्यकता है वह तो पूरी होनी चाहिए, लेकिन ये सब होने से सोसाइटी सुधर जाएगी? आप क्या सोचते हो ये सब चीज़ें रावण की लंका में नही थीं? वहां तो वह था जो हमारे पास नहीं है। हमारे पास 100–200 तोले सोना आ गया तो दिमाग आसमान में चला जाता है, हम बात ही नहीं करते, इतना सोना है हमारे पास। लेकिन लंका के अंदर तो सोना और जेवर क्या वहां तो मकान भी सोने के थे। वह लंका थी उस समय, रावण की But was it a good society, was it a ideal country? अगर वह good होती, ideal होती, अच्छी होती, आर्दश होती, उत्कृष्ट होती तो उसको जलाना नहीं पड़ता। उसको जलाना पड़ा। गड़बड़ क्या थी? गड़बड़ यह थी कि उसमें रहने वाले अच्छे नहीं थे, लोग ही अच्छे नहीं थे, रावण खुद अच्छा नहीं था। इसलिए मुख्य जो तत्व है, मुख्य जो इकाई है, वह व्यक्ति है। इस व्यक्ति को reform करना है।

अभी आर.पी. भारद्वाज एक संकेत कर रहे थे कि क्या स्थिति है अपने देश की। उत्तर प्रदेश के अंदर चपड़ासियों की 165 जगह निकलीं। how many? 165. उनकी qualification क्या थी? पाँचवीं क्लास चाहिए। मैट्रिक नहीं, चपड़ासी के लिए Matric की जरूरत क्या है, पाँचवीं क्लास पास चाहिए और साईकल चलानी आनी चाहिए उसको। it was the qualification. पाँचवीं क्लास पास होनी चाहिए और उसको साईकिल चलानी आनी चाहिए। vacancy थी कुल 165, जानते हो कितनों ने Apply किया, 25 लाख ने। आप इंटरव्यू लेंगे तो एक साल लग जाएगा और उनमें से 250 पी.एच.डी. थे, कई इंजीनियर थे, जो चपड़ासी के लिए Apply कर रहे थे। खैर अन्य डिग्री वाले भी थे। जब यह सब देखा तो एकदम माथा ठनका तो चैनल वाले भी पहुंच गए जिन लोगों ने अप्लाई किया था उन लोगों के पास। पी.एच.डी. के पास पहुंच गए, इंजीनियर के पास पहुंच गए। उनसे कहा कि आपने अप्लाई काहे को किया है? मालूम है काहे को किया है और qualification क्या थी? वे बोले कि सब मालूम है, लेकिन चपड़ासी बनने के बाद कम से कम 15000 रूपए तो मिलेंगे। हमारे पास तो वे भी नहीं हैं, जिंदा रहने के लिए पैसे नहीं हैं।

कैसे reform करेंगे इस सोसाइटी को? जब तक आप इस आदमी को योग्य नहीं बनाएंगे, आदमी को ठीक नहीं बनाएंगे। इसलिए सड़क, उद्योग, भवन, ये सब चीज़ें तो होनी चाहिएं लेकिन फिर भी अगर आप किसी सोसाइटी को सर्वांग अच्छी बनाना चाहते हैं, सात्विक बनाना चाहते हैं तो इसके लिए आपको concentrate व्यक्ति पर करना पड़ेगा। यह बहुत बड़ी विशेषता है इस देश की कि इस देश के अंदर व्यक्ति को एक दूसरी दृष्टि से देखा गया है। पश्चिम में व्यक्ति को कहते हैं कि man is bundle of desire, मनुष्य तो इच्छाओं का बंडल है। इस desire की बात आप भी एजेंडा में कर रहे हैं। बस मनुष्य की इच्छाओं को संतुष्ट करो, सुख होता जाएगा, सुख मिलता जाएगा। हमें एक नजर में या सामान्य रूप से लगता भी है कि इच्छा पूरी हो जाए तो संतुष्टि हो जाएगी। लेकिन जिसकी इच्छाएं पूरी होती हैं वह संतुष्ट

होता है क्या? और एक इच्छा पूरी हो जाने के बाद दूसरी इच्छा जन्म नहीं लेती है क्या? और गलत इच्छा आपने अगर पाल ली और उसको संतुष्ट करने के लिए अगर कोशिश की तो धीरे–धीरे वो व्यसन बन जाती है, वह नशा बन जाती है? वह आपको नहीं आपके पूरे परिवार को निगलती जाती है। तो इसलिए भारतवर्ष के अंदर व्यक्ति को bundle of desire नहीं कहा गया। यह economic being नहीं है। यहां का मनुष्य आर्थिक मानव नहीं है। तुलसी कृत रामायण में कहा गया है मनुष्य के बारे में कि ईशवर अंश जीव अविनाशी। यह ईशवर का अंश है। अब कल्पना तो करो कि व्यक्ति के अंदर क्या–क्या है? सिर्फ यह हाड़–मांस का एक पुतला नहीं है। हाड़–मांस का जो पुतला है वह तो शरीर है। पर शरीर के पीछे मन है, मन के पीछे बुद्धि है, बुद्धि के पीछे अंतःकरण है, विशाल, जिसमें आत्मा है, जो ईश्वर का अंश है, वह विराजती है। और यही आदमी जो है अगर इसी को ठीक करेंगे, सुधारेंगे तो बहुत सारी बातें ठीक हो जाएंगी। इसलिए आपने जो संगठन बनाया है National Forum for Youth Welfare, National Forum for Youth Development, For Man Making उसे आदमी को ठीक करने के लिए काम करना होगा। सबसे बड़ी समस्या है आदमी, आदमी को ठीक करिए।

आप कल्पना तो करो कि जब अंग्रेज आए तो 1857 से पहले तो एक कंपनी राज करती रही है यहां पर। उसने 100 वर्ष तक राज किया। 100 वर्ष तक एक ईस्ट इंडिया कंपनी ने देश पर राज किया और देश में राजा कितने थे? 565, परन्तु वे कैसे थे? उनको देश का स्वाभिमान ही नहीं था, आपस में एकता ही नहीं थी Divide and rule, फूट डालो और राज करो के शिकार थे। कैसे लोग थे? इसलिए आपने जो पाँच बातों का एजेंडा लिया है न Five Points Agenda यह व्यक्ति के लिए है। सबसे पहले आपने यह लिया कि जो कुछ आपके पास है वह पर्याप्त है। उसी में संतुष्ट रहिए। इसलिए पहला जो गुण है व्यक्ति का, वह है contentment, संतुष्टि। यह पहला गुण है। सोसाइटी reform अपने आप होगी, जरा इन गुणों को लाइए तो।

एक ने बहुत अच्छी बात कही थी जो अपनाने योग्य है। उसने कहा कि आपकी जो आमदनी है, वह सीमित है। चाहे जितना कमाते होंगे, आपकी आमदनी तो limited है। you can not command your incoming. जो आपकी incoming है उसको आप command नहीं कर सकते। आपको उसे command करना भी नहीं चाहिए। You can not command your incoming, but you can control your outgoings. अब ये विचार करो कि जो कुछ आपके पास है उससे ज्यादा कमाना सरल है या जो कुछ आपके पास है उसी के अंदर खर्च निपटा देना सरल है? And therefore you can control your outgoing. क्या करता है कोई? Corruption क्यों आता है? आपके पास जितना है उससे ज्यादा चाहते हैं आप। You are trying to find different ways of earning. You are not minimizing your requirements. एक परिवार जब दूसरे परिवार को देखता है तो पत्नी कहती है कि बगल के परिवार में तो कार आ गई है, आपके यहां कब आएगी? आएगी कैसे? हमारे पास तो पैसा ही नहीं? नहीं है तो कमाओ, चाहे जैसे कमाओ। ऋणं कृत्वा धृतं पीबेत, घी पीओ चाहे कर्ज लेकर पीओ। यह आदमी को बिगाड़ता है और इसलिए संतुष्टि चाहिए।

एक दूसरी चीज़ पर और विचार करो कि जो कुछ आपके पास आया है, यह सब आपके कारण आया है? आप इंजीनियर बने, आप डाक्टर बने, आप वकील बने, आप कुलपति बने, प्रोफेसर बने, आप लीडर बने, आप एम.पी. बने, एम.एल.ए. बने, किसके बल पर बने? स्वयं के बल पर? जब भगवान ने जन्म दिया तो आपको लिखकर दिया था कि आप ये बनेंगे? किसने बनाया आपको? डाक्टर वैसे ही बन गए आप? वकील वैसे ही बन गए? कहाँ से ली education? आपको किसने पढाया? यह खर्चा किसने उठाया? तो जो कुछ आपके पास है वह तो समाज ने दिया है। याद करो जरा महात्मा गाँधी को, वे कहते थे कि जो कुछ है आपके पास आप उसके ट्रस्टी हैं, मालिक नहीं हैं, मालिक तो समाज है।

जरा विचार करो कि यह भाव लोगों के मन में है क्या? कभी किसी के पास सामाज की, सोसाइटी की भलाई के लिए पैसा लेने जाओ तो क्या कहता है? हमारे पास नहीं है। वह सोचता ही नहीं कि जो कुछ मैने कमाया है वह समाज के बल पर कमाया है। यदि समाज नहीं होता तो हम क्या कमाते? एक डाक्टर जब अपनी क्लीनिक पर बैठ गया और लोग उसके पास आएं ही नहीं तो वह कमाएगा क्या? अगर एक वकील बजाए शहर के जंगल में ऑफिस खोलकर बैठ जाए तो उसके पास client नहीं आएगा, शेर आएगा दहाड़ता हुआ जंगल में। और जब वह उसको कहेगा कि मुझे मारना मत नहीं तो 302 में जाएगा, शेर को समझ में आएगा 302 क्या होता है? इसलिए दूसरा गुण है कि जो कुछ आप कमा रहे हों वह समाज के बल पर कमा रहे हैं, इसलिए समाज को भी दीजिए और अगर आप नहीं दे रहे तो आप निकम्मे हैं। आप gratefull नहीं है समाज के। यह ठीक नहीं है।

इस तरह पहला गुण है संतुष्टि और दूसरा गुण है समर्पण। समाज से जो कुछ मिला है, समाज के लिए अर्पित। जो कुछ मेरे पास है वह मेरा नहीं है, तेरा है और तुझे देने में मेरा क्या जाता है। यह पैसा तो हाथ का मैल है। तीसरे कहीं पर भी समाज के अंदर कोई आदमी अगर आपको दिखता है कि बेसहारा है, बेरोजगार है, परेशान है, व्याकुल है, विचलित है, कोई client है जिसके पास केस लड़ने के लिए पैसा नहीं है। आप उसका विचार करिए। आपको मालूम है कि अपने देश में जेलों के अंदर कितने लोग ऐसे पड़े हैं जो जुर्माना भर दें तो वे जेल से छूट जाएं। लेकिन जुर्माना भरने के लिए पैसे नहीं हैं। इसलिए पहले संतुष्टि चाहिए, दूसरा समर्पण चाहिए और तीसरा सहयोग चाहिए। यह मैं अलग से नहीं बोल रहा हूं। मैं आपके five points एजेंडा से बोल रहा हूं, लेकिन शब्द दूसरे दे रहा हूं। और चौथी चीज– जो कुछ आपके पास है उसका खर्च मितव्ययता से करिए, wastage मत करिए। आपको मालूम है कि आप अपनी जिंदगी में रोजाना पानी कितना खर्च कर देते है? आपको मालूम है कि बिजली का बिल कितना आ रहा है? आप उसको रोक सकते हैं। इसलिए अपनी आवश्यकताओं को कम करिए और आवश्यकताओं के साथ–साथ जो चीज़ आपके पास है उसकी जितनी जरूरत है उसका इस्तेमाल उतना ही करिए, no wastage. इसलिए मैने इसके लिए कहा है स्वाबलंबन, self reliant बनिए। जो कुछ है उसी से काम चलाइए। स्वाबलंबन अपनाइए।

पाँचवा–आपके attitude में, आपके व्यवहार में nagetivity नहीं चाहिए। किसी को criticise मत करीए, किसी को गालियाँ मत दीजिए। हमेशा आपका attitude positive चाहिए। इसको हिन्दी में कहते हैं सकारात्मकता, positivity, सकारात्मकता। मैने five points को पांच शब्द दिए हैं। पहला कौन सा है–संतुष्टि, दूसरा कौन सा है–समपर्ण और तीसरा सहयोग, चौथा स्वाबलंबन और पाँचवां सकारात्मकता।

अब कल्पना करो कि इन गुणों को लेकर कल कोई व्यक्ति खड़ा होता है तो देश की स्थिति कैसी होगी? इसलिए स्वामी विवेकानंद कहते थे कि अगर कोई व्यक्ति आपके पास आता है और आप उसकी सेवा करते हैं तो ऐसा मत सोचिए कि आपने कुछ दया की है। आप यह समझिए कि आपने अपने जीवन का कर्त्तव्य निभाया है। क्योंकि भगवान ने आपको इसलिए भेजा है कि आप अपना कर्त्तव्य पूरा कर सकें। इस तरह के गुणों से युक्त जो व्यक्ति होगा उसको अपने यहां डा. राधाकृष्णन ने आध्यात्मिक मानव कहा है। Economic being नहीं कहा है, आध्यात्मिक मानव कहा है। उसको स्वामी विवेकानंद ने the man with capital aim कहा है। इसको महर्षि अरविन्द ने सुपरमैन कहा है, महामानव। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने उसको एकात्म मानव कहा है, परिपूर्ण मानव। और गीता के अंदर उसको स्थितप्रज्ञ कहा गया है।

अभी भार्गव साहब बता रहे थे न कुछ कि who is healthy man? स्वस्थ आदमी कौन है? जब crises में आए तो भी उसे कोई फर्क न पड़े। यह स्थितप्रज्ञ वही है। गीता का जो स्थितप्रज्ञ है वह दुख में भी वैसा ही है, वह सुख में भी वैसा ही है, उसको फर्क ही नहीं पड़ता। क्यों? क्योंकि वह निष्काम है, वह इच्छाओं से परे है, वह desireless है, उसको कोई मोह नहीं है, कोई affection नहीं है, कोई आसक्ति नहीं है, कोई ममता नहीं है, He is above desires. निष्काम है वह।

तो फिर समाज के अंदर इस तरह के व्यक्ति की कल्पना कीजिए। आप सोच सकते हैं कि यह काम नए रूप में शुरू आपने किया है, लेकिन यह तो भारतवर्ष का पुराना काम है, व्यक्ति को बनाना और ऐसा बनाना कि वह नर से नारायण बन जाए। इसलिए एक बार फिर आपके सेमिनार को शुभकामनाएं देते हुए धन्यवाद भी देता हूं और अपनी बात को समाप्त भी करता हूं।

जयहिंद!